



Toxics Link
for a toxics-free world

प्रेस विज्ञप्ति

माताएँ सावधान हो जाएँ! आपके बच्चों के नैपीज विषाक्त रसायनों से दूषित हैं!

नई दिल्ली, सितंबर 28, 2020: यदि आपके घर में शिशु या छोटा बच्चा है जो अभी चलना सीख रहा है जिसे आप बहुत प्यार करती हैं और समझदारी से देखभाल करती हैं, तो यह समाचार खास आप के लिए है! दिल्ली स्थित संगठन 'टॉक्सिक्स लिंक' द्वारा जारी, 'व्हाट्स इन द डायपर: प्रेसेंस ऑफ थैलेट्स इन बेबी डायपर्स' शीर्षक के नवीन अध्ययन में भारतीय बाजार में उपलब्ध डिस्पोजेबल बेबी नैपीज में विषैले थैलेट पाए जाने पर चिंता व्यक्त की गई है। थैलेट, अंतःस्त्रावी रसायनों की कार्यप्रणाली में व्यवधान उत्पन्न कर स्वास्थ्य को गंभीर हानि पहुँचाते हैं।

"अध्ययन में 2.36 पीपीएम से लेकर 302.25 पीपीएम तक थैलेट की अत्यधिक मात्रा पाई गई। डीईएचपी (DEHP) सबसे विषाक्त थैलेट है और बच्चों के कई उत्पादों में इसका उपयोग कानूनन मना है या प्रतिबंधित है, लेकिन जाँच किए गए नमूनों में इसकी मात्रा 2.36 पीपीएम से 264.94 पीपीएम के बीच पाई गई थी," अलका दुबे, 'टॉक्सिक्स लिंक' में प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर (कार्यक्रम समन्वयक) ने यह वक्तव्य दिया। अध्ययन के लिए, दिल्ली में स्थानीय बाजारों और केमिस्ट की दुकानों से 20 डायपर नमूने एकत्र किए गए; कुछ डायपर आमतौर पर उपयोग किए जाने वाले ई-कॉमर्स प्लेटफार्मों से भी खरीदे गए थे। सभी नमूनों का विश्लेषण एनएबीएल से मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला (स्पेक्ट्रो एनालिटिकल लैब लिमिटेड ओखला, नई दिल्ली) में किया गया।



"थैलेट आम तौर पर डायपर में उपयोग किए जाने वाले बहुलकों (पॉलीमर्स) से असहसंयोजक रूप से आबंधित होते हैं; वे डायपर से आसानी से मुक्त हो जाते हैं। चूँकि डायपर कई महीनों तक शिशुओं और बच्चों के बाहरी जननांगों के साथ सीधे संपर्क में रहते हैं, इसलिए ये थैलेट त्वचीय अवशोषण के माध्यम से शिशुओं के शरीर में प्रवेश कर सकते हैं और बच्चों के स्वास्थ्य को प्रतिकूल रूप

से प्रभावित कर सकते हैं। ये थैलेट अंतःस्त्रावी तंत्र की कार्यप्रणाली को बाधित करने वाले रासायनिक तत्वों के रूप में जाने जाते हैं जो अंतःस्त्रावी तंत्रों को सीधे प्रभावित करते हैं और मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मोटापा और प्रजनन विकारों जैसे कई रोग उत्पन्न कर सकते हैं। वैज्ञानिक अध्ययनों से यह बात स्पष्ट हुई है कि त्वचा, डायपर से थैलेट का अवशोषण कर लेती है।", सतीश सिन्हा, टॉक्सिक्स लिंक में एसोसिएट डायरेक्टर (सह-निदेशक) ने यह बात कही। उन्होंने आगे कहा कि "इसके अतिरिक्त ये रसायन निक्षालित होकर नगर निगम अपशिष्ट प्रवाह में जा सकते हैं और पर्यावरण में भी गंभीर चुनौतियां उत्पन्न कर सकते हैं,"।

"यह भारत में अपनी तरह का पहला अध्ययन है। इन थैलेट का विभिन्न उत्पादों और सबसे महत्वपूर्ण रूप से बच्चों के उत्पादों में उपयोग, चरणबद्ध रूप से समाप्त करने के लिए, विश्व स्तर पर प्रयास किए गए हैं। भारत ने बच्चों के विभिन्न उत्पादों में पांच सामान्य थैलेट (डीईएचपी, डीबीपी, बीबीपी, डीईटीपी, डीएनओपी और डीएनपी) के लिए मानक भी तय किए हैं। लेकिन, हमारे देश में डिस्पोजेबल बेबी डायपर के लिए ऐसा कोई नियमन नहीं है।" पीयूष महापात्र, 'टॉक्सिक्स लिंक' में सीनियर प्रोग्राम कोर्डिनेटर (वरिष्ठ कार्यक्रम समन्वयक) ने कहा।

इस अध्ययन से लेबलिंग भी बड़ी चिंता के रूप में सामने आई है, क्योंकि जाँच किए गए नमूनों के विनिर्माताओं में से किसी ने भी डायपर बनाने के लिए उपयोग किए गए अवयवों और रासायनिक घटकों को सूचीबद्ध नहीं किया था। विनिर्माताओं को इस



Toxics Link
for a toxics-free world

मुद्दे पर गौर करने और मानव स्वास्थ्य तथा पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों पर विचार करते हुए डायपर में थैलेट का उपयोग करने से बचने की जरूरत है। इसके साथ ही सरकार को डायपर में थैलेट के उपयोग को चरणबद्ध रूप से समाप्त करने के लिए उपयुक्त विनियम लागू करके सख्त कार्रवाई करने एवं उत्पादों की पैकेजिंग और लेबलिंग के लिए कुछ कठोर उपाय करने की जरूरत है।

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष

- 40% नमूने स्थानीय साप्ताहिक बाजार से खरीदे गए थे जबकि 60% प्रसिद्ध ब्रांडों के थे।
- वर्तमान अध्ययन में डीईएचपी, डीबीपी, डीआईबीपी, बीबीपी और सम्पूर्ण थैलेट का विश्लेषण किया गया था।
- जाँचे गए सभी नमूनों में डीईएचपी, डीबीपी, बीबीपी पाया गया।
- सर्वाधिक थैलेट मात्रा **302.25 पीपीएम** पाई गई थी।
- जाँचे गए नमूनों में सबसे विषाक्त थैलेट - डीईएचपी की मात्रा **2.36 पीपीएम** से **264.94 पीपीएम** तक पाई गई थी।
- डीबीपी की मात्रा **2.35 पीपीएम** से **37.31 पीपीएम** तक पाई गई थी जबकि डायपर नमूनों में थैलेट की कुल मात्रा **8.2 पीपीएम** से **302.25 पीपीएम** के बीच थी।
- बीबीपी की मात्रा संसूचन सीमा से कम थी या अधिकांश नमूनों में इसकी उपस्थिति का पता नहीं चला, यह केवल एक नमूने में पाया गया जिसमें इसकी मात्रा **3.24 पीपीएम** थी।
- तीन नमूनों में डीआईबीपी की उपस्थिति पाई गई जिनमें इसकी मात्रा **1.92 पीपीएम** से **12.36 पीपीएम** के बीच थी।



अधिक जानकारी और साक्षात्कार के लिए कृपया संपर्क करें:

पीयूष महापात्र,

9873453242; piyush@toxicslink.org

अलका दुबे

7678590506; alka@toxicslink.org

इप्सिता बैश्य

6900925569; ipsita@toxicslink.org